उत्तेजना दूर करने के लिए मरीज़ को कोई दवा दी जाती है। इसके बाद रक्तचाप आदि की जांच होती है और फिर एनेस्थीशिया देने का काम शुरू होता है। शल्यक्रिया के दौरान भी एनेस्थेटिस्ट का काम बन्द नहीं होता। उसे अपने मरीज़ पर पूरी नज़र रखनी पड़ती है।

लोकल एनेस्थीशिया: लोकल व रीजनल एनेस्थीशिया छोटी शल्यक्रिया में काम आती है। इसमें मरीज़ को बेहोश नहीं किया जाता है; बस, शल्यक्रिया किए जाने वाले अंग को सुन्न कर दिया जाता है। नाक, कान, गला आदि में लोकल एनेस्थीशिया दिया जाता है। शरीर के बड़े भाग को सुन्न करने को रीजनल एनेस्थीशिया कहते हैं। लोकल एनेस्थीशिया में एक इंजेक्शन देकर ज़रूरी हिस्से को सुन्न कर दिया जाता है। छोटी शल्यक्रिया के लिए यह सर्वश्रेष्ठ तरीका है। सिज़ेरियन शल्यक्रिया में यही तरीका अपनाया जाता है।

शल्यक्रिया के बाद

शल्यक्रिया के बाद मरीज़ को होश में लाने के लिए एण्टी ड्रग दी जाती हैं। इसे रिवर्सल कहते हैं। शल्यक्रिया के 8-10 घण्टे बाद मरीज़ पूरी तरह होश में आ जाता है। होश में आने तक एनेस्थेटिस्ट मरीज़ के साथ रहता है।

आपातकालीन स्थिति में शल्यक्रिया तुरन्त करनी पड़ती है। इसलिए चेकअप आदि सम्भव नहीं हो पाता है। एनेस्थेटिस्ट को ऐसे में पूरी सावधानी से अपना कौशल दिखाना पड़ता है।

इसके अलावा एनेस्थेटिस्ट के कुछ और काम हैं जैसे - बड़े अस्पतालों में दर्द निवारण क्लिनिक होते हैं, जहां मरीज़ों का दर्द-निवारण किया जाता है। पूरी तरह दर्द दूर न भी किया जा सके, तो भी कम ज़रूर किया जाता है। कई लाइलाज रोगों में भी दर्द कम करने के लिए एनेस्थेटिस्ट की मदद ली जाती है। एनेस्थेटिस्ट दर्द कम करने के लिए दवाइयां देता है। गठिया, वात, माइग्रेन आदि कई दर्दों का इलाज एनेस्थेटिस्ट ही करते हैं। आजकल प्रसव के समय भी दर्द कम करने के लिए एनेस्थेटिस्ट की सहायता ली जाती है। *(स्रोत फीचर्स)*

हीट पैड से स्तन कैंसर का निदान

अमरीका में कुछ ऐसे ताप संवेदी पैड निकले हैं जिन्हें महिलाओं की चोली के अन्दर रखने पर स्तनों की आम बीमारियों के साथ-साथ स्तन कैंसर का भी पता लगाया जा सकता है। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये पैड स्तनों को मैम्मोग्राम्स (स्तनग्रंथियों के एक्स-रे) की तुलना में कम विकिरण के सम्पर्क में लाते हैं। ये पैड कम उम्र की औरतों के लिए ज़्यादा कारगर हैं क्योंकि उनके स्तन कड़े होते हैं तथा स्तन-ऊतक घने होते है।

चूंकि सामान्य कोशिकाओं के मुकाबले कैंसरग्रस्त कोशिकाओं का चयापचयन ज़्यादा सक्रिय होता है, इसलिए ये गर्मी भी ज़्यादा पैदा करती हैं। 15 मिनट पहने रहने के बाद दोनों स्तनों के पैड के तापमान की आपस में तुलना की जाती है ताकि तापमान में यदि कोई फर्क हो तो उसका पता चल जाए। इस सम्बंध में अल्बर्ट आइंस्टीन मेडिकल कॉलेज की डायग्नॉस्टिक रेडियोलॉजिस्ट एवरेट एम लॉटिन का कहना है कि यदि दोनों स्तनों के तापमान में फर्क पाया जाए, तो इसका मतलब यह होता है कि असामान्य तापमान वाले स्तन की और ज़्यादा ध्यान से जांच होनी चाहिए।

ये पैड 40 साल से कम उम्र की महिलाओं के लिए ज़्यादा उपयोगी साबित हो सकते हैं। विशेषकर उन महिलाओं के लिए जो आमतौर पर तब तक मैम्मोग्राम नहीं करवातीं जब तक चिकित्सकीय जांच के दौरान उनके स्तन में किसी संदेहजनक गांठ का पता नहीं चल सकता। वैसे ये पैड शरीर की जांच से कहीं पहले ही स्तन में आए परिवर्तनों का पता लगा सकने में भी सक्षम हैं। *(स्रोत फीचर्स)*